ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

छप्पड़ चीरी रणक्षेत्र का आँखों देखा हाल
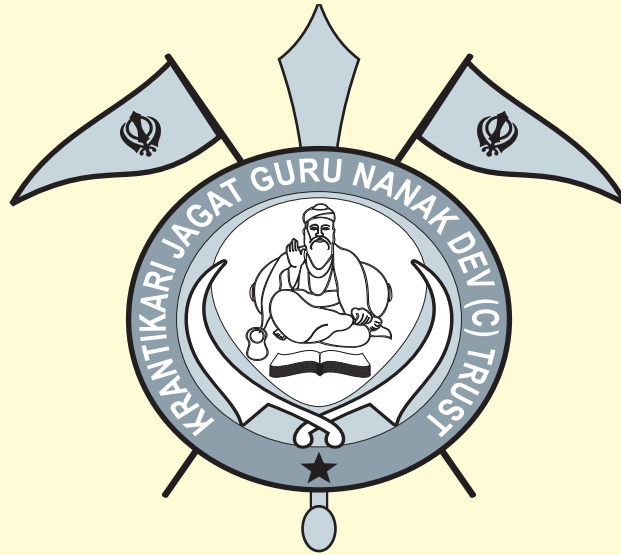
लेखक : स. जसबीर सिंघ

क्रांतिकारी गुरू नानक देव चैरिटेबल ट्रस्ट, चण्डीगढ़

Website : www.sikhworld.info

१ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।

जत्थेदार गुरबख्श सिंघ
उरफ़

बाबा बन्दा सिंघ बहादुर द्वारा सिरहिन्द विजय का विस्तृत विवरण

छप्पड़ चीरी रणक्षेत्र का आँखों देखा हाल

भूमिका

सन् 1708 ई० के प्रारम्भ में महाराष्ट्र प्रांत के नंदेड़ नगर में गोदावरी नदी के तट पर श्री गुरू गोबिन्द सिंघ जी ने एक माधोदास बैरागी नामक साधु को व्यंग वाण से चुनौति देकर गफलत की नींद से जागृत कर लोह पुरूष में परिवर्तित कर दिया तथा उसे सिंघों की सेना का सेना नायक नियुक्त कर के पंजाब से मुगलों की सलतनत के जूल्मों सितम को समाप्त करने का आदेश दिया । यह वैरागी साधु गुरू दीक्षा प्राप्त कर गुरबख्श सिंघ नाम धारण करके श्री गुरू गोबिन्द जी का बंदा कहलाने लगा अर्थात वह गुरूदेव का प्रतिनिधि बन कर पंजाब पहुँचा उस के पास गुरूदेव के हक्मनामें थे। जो समस्त सिक्ख जगत के नाम थे । हुक्म था जहाँ-कहीं भी खालसा है तुरन्त हमारे प्रतिनिधि (बंदे) के नेतृत्व में संगठित हो जाएं । बस फिर क्या था । गुरू के बंदे के पास देश के कौन-कौन से खालसा अस्त्र शस्त्रों सहित बड़ी संख्या में पहुँचने लगा । जब गुरू के प्रतिनिधि (बन्दे) ने महसूस किया अब मेरे पास सिक्ख सेना युद्ध करने के लिए प्रयाप्त है तो उस ने गुरुदेव द्वारा दिये गये लक्ष्य के अनुसार अपना कार्यक्रम विजय घोष का बिगुल बजा दिया । सर्वप्रथम उसने समाणा क्षेत्र विजय किया तत्पश्चात संढोरा इत्यादि । जब उसने अनुभव किया अब मेरे पास सैन्य बल इस योग्य है कि मैं सिरहिन्द के नवाब वज़ीद खान को चुनौति दे सकता हूँ तो उसने वज़ीद खान को ललकारा और गुरदेव के अल्प आयु के निर्दष सुकुमारों की हत्या कर हिसाब चुकता करने के लिए जा पहुँचा छप्पर चीरी के रण क्षेत्र में........... अब आगे इस युद्ध का विस्तृत विवर्ण पढ़ियें । इन दिनों खालसा सेना अपने इस गुरू के बंदे को बन्दा सिंध बहादुर के नाम से पुकारते थे ।

पंजाब के माझा क्षेत्र के सिंघो से शेर खान का युद्ध

अब हम उन सिंघो का वर्णन करते है जो कीरतपुर में एकत्र हो रहे थे। इस समाचार ने कि सिंह सरहिन्द की ओर बढ़ने का कार्यक्रम बना रहें है, बजीद खान की नींद हराम कर दी। उसने सिंघो के दोनों दलों को मिलने से रोकने के लिए समस्त शक्ति लगा दी। मलेरकोटले के नवाब शेर मुहम्मद खान को कीरतपुर वाले सिक्खों को आगे बढने से रोकने के लिए भेजा। शेर मुहम्मद के पास अपनी सैनिक टुकडियां भी थी। नवाब के साथ उसका भाई खिजर खान तथा दो भतीजे खान वली व मुहम्मद बख्श भी थे। उस समय दूसरी ओर सिक्खों की संख्या इन की तुलना मे बहुत कम थी। उनके पास कोई अच्छे शस्त्र-अस्त्र भी न थे। रोपड़ के पास दोनों सेनाओं का सामना हुआ। सिंह बहुत बहादुरी से लड़े परन्तु संध्या समय ऐसा अनुभव हो रहा था कि जैसे शेर मुहम्मद का पक्ष भारी है। किन्तु रात्रि में सिंघो का एक दल माझा क्षेत्र से आ पहुंचा बस फिर क्या

था, दूसरे दिन सूर्य उदय होते ही सिंघों ने खिजर खान पर आक्रमण कर दिया। सिंह आगे ही बढते गये। दोनों सेनाएं इतनी समीप हो गयी कि हाथों-हाथ युद्ध आरम्भ हो गया। इस समय सिंघों ने खूब तलवार चलाई। खिजर खान ने सिखों को हथियार फेंक देने के लिए ललकारा, तभी उस की छाती में एक गोली लगी, जिसने उस को सदैव के लिए मौत की गोद मे सुला दिया। पठान, खिजर खान को गिरते हुए देखकर भाग उठे। शेर मुहम्मद खान स्वयं आगे बढ़ा। उसके भतीजे भी साथ थे, जो अपने पिता के शव को उठाना चाहते थे, परन्तु सिंघों ने उन दोनों को भी जहन्नुम पहुंचा दिया। शेर मुहम्मद खान भी घायल हो गया। मुगल सेनाएं सिर पर पैर रखकर भाग उठी। इस प्रकार मैदान सिंघों के साथ आया।

वजीद खान की तैयारी

सरहिन्द के सूबेदार बजीद खान ने खालसा दल के सेना नायक बंदा सिंह बहादुर से निपटने के लिए युद्ध की तैयारियों में सभी सम्भव साधन जुटा दिये। शाही सेना ने दिल्ली व लाहौर से कुमक मंगवाई। नई भर्ती खोल दी गई। अपने सज्जन, मित्र राजवाडों को सहायता के लिए बुला लिया और जहाद का नारा लगा कर ग़ाजीओ के झुरमट इक्टठे कर लिए। उसने गोला-बारूद से गोदाम भर लिए। अनगनित तोप और हाथी अनगिनत इकट्ठे कर लिये गये। इतिहासकारों का अनुमान है कि इन सब लड़ाकों की संख्या एक लाख के करीब हो गई थी। वह किसी प्रकार भी पराजित होने का ख़तरा नहीं लेना चाहता था। अत: उस ने दल खालसा की संख्या और शक्ति को जांचने के उपाये किये। उसने सुच्चा नंद के भतीजे को एक हजार हिन्दू सैनिक देकर बंदा सिंह के पास भेजा और उसे छल कपट करने का अभिनय करने को कहा- "कि वह मुगलों के अत्याचारों से पीड़ित है अत: वह वहाँ से भागकर आप की शरण में आया है"। इस के पीछे योजना यह थी कि जैसे ही सुच्चा नन्द का भतीजा उनका विश्वास पात्र बन जायेगां ठीक युद्ध के समय, गर्म रणक्षेत्र से उस की सेना भागकर वापस शाही सेना में आ मिलेगी और दल खालसा के भेद बतायेगी। इस प्रकार उन पर विजय प्राप्त करना सहज हो जायेगा।

दल खालसा का योजनाबद्ध कार्यक्रम

दल खालसा के जत्थेदार बंदा सिंह बहादुर को उस के सहायक परामर्श देने लगे कि हमें और देरी नहीं करनी चाहिए जल्दी ही सरहिन्द पर आक्रमण कर देना चाहिए। इस पर बंदा सिंह ने विचार दिया हम धीरे-धीरे आगे बढते है और माझा क्षेत्र के सिंघों के पहुचने तक स्थानीय गुरू के सिक्खों को प्रेरित कर के शस्त्र उठवाने का प्रयास करते है। जिस से हमारी संख्या शत्रु के मुकाबले की हो जाये। बंदा सिंह का विचार उत्तम था कि यह क्षेत्र गुरू घर के श्रद्धलुओं का था। जैसे ही दल खालसा ने सेना भर्ती अभियान चलाया आस-पास के लोग गुरू साहब के हुक्मनामों के कारण और बंदा सिंह के चुम्बकीय आक णि के कारण, गुरूदेव के बच्चों का बदला लेने के विचार से दल खालसा के नायक बंदा सिंह के नेतृत्व मे इकट्ठे हो गये। कुछ ही दिनों में बंदा सिंह के जवानों की संख्या चालिस हजार से सत्तर हजार हो गई। वास्तव में लोग बंदा सिंह को गुरूदेव का प्रतिनिधि समझते हुए अपने को समर्पित करने लगे। जैसे ही बंदा सिंह ने अनुभव किया कि अब हमारे पास प्रयाप्त मात्रा में सभी प्रकार के साधन उपलब्ध है तो वह अपना सैन्य बल लेकर सरहिन्द की ओर बढ़नें लगा। यहीं उसे सुच्चा नंद का भतीजा एक हजार सिपाहियों के साथ मिला और उसने दल खालसा से शरण मांगी। इस पर दल खालसा की पंचायत ने बहुत गम्भीरता से विचार किया। पंचायत का मत था कि वह शत्रु पक्ष का व्यक्ति है केवल छल-कपट की राजनीति के कारण हमारे पास पहुंचा है इसलिए इसे कदाचित शरण नहीं देनी चाहिए। एक विचार यह भी था कि इसे वापस लोटाने से शत्रु की शक्ति बढेगी। यदि इसे निश्क्रिय कर के अपने पास रखा जाये तो अच्छा है। अत: इसे सबसे पिछली पंक्ति में रखा जाना चाहिए ताकि किसी प्रकार कि क्षति न पहुंचा सके ।

दल खालसा को आशा थी कि बनुड़ क्षेत्र में पहुचने पर वजीद खान की सेना से आमना-सामना हो जाएगा परंन्तु वाजीद खान की सेना और उसके सहयोगी शेर मुहम्मद खान रोपड़ के पास कीर्तपुर से आये माझा क्षेत्र के सिंघों से जुझ रहा था। उसका ध्येय था कि यहां से सिक्ख लोग दल खालसा से न मिल सके। परन्तु वह इस लक्ष्य को प्राप्त न कर सका। वहां पर एक भाई और दो भतीजे मरवा कर घायल अवस्था में मलेरकोटला लौट आया।

दल खालसा की शक्ति का सामना बनुड का फौजदार न कर सका और जल्दी ही परास्त हो गया। इस प्रकार बनूड़ क्षेत्र दल खालसा के कब्जे मे आ गया। यहां से बहुत बड़ी संख्या में दल को अस्त्र-शस्त्र प्राप्त हुए। अब दल खालसा ने निर्णय लिया, पहले माझा क्षेत्र से आ रहे सिंघों को मिल लिया जाये वे रोपड़ की ओर प्रस्थान कर गये। दोनों दलों का खरड़ ग्राम के

निकट छप्पड़चीरी नामक गांव मे मिलन हुआ। दोनों ओर से खु ी में जयकारे बुलंद किये गयें। ‘जो बोले सो निहाल, सत श्री अकाल’।

छप्पड़ चीरी का ऐतिहासिक युद्ध

सरहिन्द के सुबेदार वज़ीद खान को सूचना मिली कि बंदा सिंह के नेतृत्व मे दल खालसा और माझा क्षेत्र का सिंघो का काफला आपस मे छप्पड़ चीरी नामक गांव में मिलने मे सफल हो गया है और वे सरहिन्द की ओर आगे बढने वाले हैं। तो वह अपने नगर की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए, सिक्खों से लोहा लेने अपना सैन्य बल लेकर छप्पड़ चीरी की ओर बढ़ने लगा। दल खालसा ने वही मोर्चा बंदी प्रारम्भ कर दी। वज़ीद खान की सेना ने आगे हाथी, उस के पीछे ऊंट, फिर घोड़ सवार और उस के पीछे तोपे व प्यादे (सिपाही)। अंत मे हैदरी झंडे के नीचे, गाज़ी जेहाद का नारा लगाते हुए चले आ रहे थे अनुमानतः इन सब की संख्या एक लाख के लगभग थी। सरहिन्द नगर की छप्पड चीरी गांव से दूरी लगभग 20 मील है।

इधर दल खालसा के सेनानायक जत्थेदार बंदा सिंह बहादुर ने अपनी सेना का पुनर्गठन कर के अपने सहायक फतेह सिंह, कर्म सिंह, धर्म सिंह और आली सिंह को मालवा क्षेत्र की सेना को विभाजित कर के उपसेना नायक बनाया। माझा क्षेत्र के सेना को विनोद सिंह और बाज सिंह की अध्यक्षता मे ं मोर्चा बंदी करवा दी। एक विशेष सैनिक टुकड़ी (पलटन) अपने पास संकट काल के लिए इन्दर सिंह की अध्यक्षता मे सुरक्षित रख ली और स्वयं एक टीले (टेकरी) पर विराज कर युद्ध को प्रत्यक्ष दूरबीन से देखकर उचित निर्णय लेकर आदेश देने लगे। दल खालसा के पास जो छः छोटे आकार की तोपे थी उन को भूमिगत मोर्चो में स्थित कर के शाहबाज सिंह को तोपखाने का सरदार नियुक्त किया। इन तोपों को चलाने के लिए बुंदेलखण्ड के विशेषज्ञ व्यक्तियों को कार्यभार सौंपा गया। तोपचियों का मुख्य लक्ष्य, शत्रु सेना की तोपों को खदेड़ना और हाथियों को आगें न बढ़ने देने का दिया गया, सब से पीछे नवसीखियें जवान रखे गये और उस के पीछे सुच्चा नंद के भतीजे गंडा मल के एक हज़ार जवान थे ।

सूर्य की पहली किरण धरती पर पड़ते ही युद्ध प्रारम्भ हो गया। शाही सेना नाअरा-ए-तकबीर- अल्लाह हू अकबर के नारे बुलंद करते हुए सिंघों के मोर्चो पर टूट पड़ी। दूसरी ओर से दल खालसा ने उत्तर में “बोले सो निहाल, सत श्री अकाल” जय घो ा कर के उत्तर दिया और छोटी तोंपों के मुंह खोल दिये। यह तोपे भूमिगत अदृश्य मोर्चो में थी अंत इनकी मार ने शाही सेना की अगली पंक्ति उड़ा दी। बस फिर क्या था शाही सेना भी अपनी असंख्य बड़ी तोपो का प्रयोग करने लगी। दल खालसा वृक्षों की आड़ में हो गया। जैसे ही शत्रु सेना की तोपों की स्थिति स्पष्ट हुई शाहबाज सिंह के तोपचियों ने अपने अचूक निशानों से शत्रु सेना की तोपों का सदा के लिए शांत करने का अभियान प्रारम्भ कर दिया जल्दी ही गोला-बारी बहुत धीमी पड़ गई। क्योंकि शत्रु सेना के तोपची अधिकांश मारे जा चुके थे। अब मुग़ल सेना ने हाथियों की कतार को सामने किया परन्तु दल खालसा ने अपनी निर्धारित नीति के अंतर्गत वही स्थिति रख कर हाथियों पर तोप के गोले बरसाए इस से हाथियों में भगदड़ मच गई। इस बात का लाभ उठाते हुए घोड़ सवार सिंह शत्रु खेमे में घुसने में सफल हो गये और हाथियों की कतार टूट गई। बस फिर क्या था? सिंघों ने लम्बे समय से हृदय में प्रतिशोध की भावना जो पाल रखी थी, उस अग्नि को ज्वाला बनाकर शत्रु पर टूट पड़े घमासान का युद्ध हुआ। शाहीसेना केवल संख्या के बल पर विजय की आशा लेकर लड़ रही थी, उन में से कोई भी मरना नहीं चाहता था जबकि दल खालसा विजय अथवा शहीदी में से केवल एक की कामना रखते थे, अतः जल्दी ही मुग़ल फौजें केवल बचाव की लडाई लड़ने लगे। देखते ही देखते शवों के चारों ओर ढेर दिखाई देने लगे। चारों तरफ मारो-मारो की आवाजें ही आ रही थी। घायल जवान पानी-पानी चिल्ला रहे थे और दो घण्टों की गर्मी ने रणक्षेत्र तपा दिया था। जैसे-जैसे दोपहर होती गई जहादियों का दम टूटने लगा उन्हें जेहाद का नारा धोखा लगने लगा, इस प्रकार गाज़ी धीरे-धीरे पीछे खिसकने लगे। वह इतने हताश हुए कि मध्य दोपहरी तक सभी भाग खड़े हुए। दल खालसे का मनोबल बहुत उच्च स्तर पर था। वे मरना तो जानते थे, पीछे हटना नहीं। तभी गददार सुच्चानंद के भतीजे गंडामल ने जब खालसा दल मुग़लों पर भारी पड़ रहा था, तो अपने साथियों के साथ भागना शुरू कर दिया। इस से सिंघों के पैर उखड़ने लगे क्योंकि कुछ नौसिखिए सैनिक भी गर्मी की परेशानी न झेलते हुए पीछे हटने लगे। यह देखकर मुग़ल फौजियों की बाछें खिल उठी। इस समय अबदुल रहमान ने वजीद खान को सूचना भेजी “गंडामल ब्रह्माण ने अपना इकरार पूरा कर दिखाया है, जहांपना”। इस पर वजीद खान ठहका मार के हंसा और कहने लगा,“अब मरदूद बंदे की कुमक क्या करती है, बस देखना तो यहीं है। अब देरी न करो बाकी फौज भी मैदान-ए-जंग में भेंज दो, इन्शा-अल्ला जीत हमारी ही होगी।”

दूसरी तरफ जत्थेदार बंदा सिंह और उसके संकट कालीन साथी अजीत सिंह यह दृश्य देख रहे थे। अजीत सिंह ने आज्ञा

मांगी "गंडामल और उस के सवारों को गद्दारी का इनाम दिया जाये"। परन्तु बंदा सिंह हंसकर कहने लगा "मैं यह पहले से ही जानता था खैर......... अब आप ताजा दम संकट कुमक लेकर विकट परिस्तिथियों में पड़े सैनिकों का स्थान लो" ।

अजीत सिंह तुरन्त आदेश का पालन करता हुआ वहां पहुंचा जहां सिंघों को कुछ पीछे हटना पड़ गया था। फिर से घमासान युद्ध प्रारम्भ हो गया। मुग़लो की आशा के विपरीत सिंघों की ताजा दम कुमक ने रणक्षेत्र का पासा ही मोड़ दिया। सिंह फिर से आगे बढ़ने लगे। इस प्रकार युद्ध लड़ते हुए दोपहर ढलने लगी। जो मुग़ल कुछ ही देर में अपनी जीत के अंदाजे लगा रहे थे। वह भूख-प्यास के मारे पीछे हटने लगे किन्तुं वह भी जानते थे कि इस बार की हार उनके हाथ से सरहिन्द तो जायेगा ही; साथ में मृत्यु भी निश्चित ही है। अत: वह अपना अंतिम दाव भी लगाना चाहते थे। इस बार वजीद खान ने अपना सभी कुछ दाव पर लगाकर फौज को ललकारा और कहा - "चलो ग़ाजियों आगे बढ़ो और काफ़िरों को मार कर इस्लाम पर मंडरा रहे खतरे को हमेशा के लिए खत्म कर दो। इस हल्ला शेरी से युद्ध एक बार फिर भड़क उठा। इस बार उपसेना नायक बाज सिंह, जत्थेदार बंदा सिंह के पास पहुंचा और उसने बार-बार स्थिति पलटने की बात बताई। इस बार बंदा सिंह स्वयं उठा और शेष संकट कालीन सेना लेकर युद्ध भूमि मे उतर गया। उसे देखकर दल खालसा में नई स्फूर्ति आ गई। फिर से घमासान युद्ध होने लगा। इस समय सूर्यास्त होने में एक घण्टा शेष था। उपनायक बाज सिंह व फतेह सिंह ने वजीद खान के हाथी को घेर लिया। सभी जानते थे कि युद्ध का परिणाम आखरी दाव में छिपा हुआ है, अत: दोनों ओर के सैनिक कोई कसर नहीं छोड़ना चाहते थे। सभी सैनिक एक-दूसरे से गुथम-गुथा होकर विजयी होने की चाहत रखते थे।

ऐसे में बंदा सिंह ने अपने गुरूदेव श्री गुरू गोबिंद सिंह जी प्रदान वह बाण निकाला जो उसे संकट काल सें प्रयोग करने के लिए दिया गया था। गुरूदेव जी ने उसे बताया था, वह बाण आत्मबल का प्रतीक है। इस के प्रयोग पर समस्त अदृश्य शक्तियां तुम्हारी सहायता करेगी।

ऐसा ही हुआ देखते ही देखते वजीद खान मारा गया और शत्रु सेना के कुछ ही क्षणों में पैर उखड़ गये और वे भागने लगे। इस समय का सिंहों ने भरपूर लाभ उठाया, उन्होंने तुरन्त मलेरकोटला के नवाब शेर मुहम्मद खान तथा ख्वाजा अली को घेर लिया वे अकेले पड़ गये थे। उनकी सेना भागने में ही अपना भला समझ रही थी। इन दोनों को भी बाज सिंह व फतेह सिंह ने रणभूमि में मुकाबले में मार गिराया। इनके मरते ही समस्त मुग़ल सेना जान बचाती हुई सरहिन्द की ओर भाग गई। सिंघो ने उनका पीछा किया किन्तु जत्थेदार ने उन्हें तुरन्त वापस आने का आदेश भेजा। उन का विचार था कि हमें समय की नज़ाकत को ध्यान मे रखते हुए अपने घायलों की सेवा पहले करनी चाहिए। उसके बाद जीते हुए सैनिकों की सामग्री कब्जे में लेना चाहिए। इस के बाद शहीदों को सैनिक सम्मान के साथ अंतिम संस्कार उनकी रीति अनुसार करने चाहिए।

यह ऐतिहासिक विजय 12 मई सन् 1710 को दल खालसे को प्राप्त हुई। इस समय दल की कुल संख्या 70 हजार के लगभग थी। इस युद्ध में 30 हजार सिंह काम आये और लगभग 20 हजार घायल हुए। लगभग यही स्थिति शत्रु पक्ष की भी थी। उनके ग़ाजी अधिकांश भाग गये थे। युद्ध सामग्री में सिंघों को 45 बड़ी तोपे, हाथी, घोड़े व बंदूके बड़ी संख्या मे प्राप्त हुई । नवसिखिये सैनिक जो भाग गये थे। उनमें से अधिकांश लौट आये और जत्थेदार से क्षमा मांग कर दल में पुन: सम्मिलित हो गये। जत्थेदार बंदा सिंह ने खालसे-दल का जल्दी से पुनर्गठन किया और सभी को सम्बोधन कर के कुछ आदेश सुनाये :-

1. कोई भी सैनिक किसी निर्दोश व्यक्ति को पीड़ित नहीं करेगा ।
2. कोई भी महिला अथवा बच्चों पर अत्याचार व शेषण नहीं करेगा।केवल दुष्ट का दमन करना है और गरीब की रक्षा करनी है। इसलिए किसी की धार्मिक भवन को क्षति नहीं पहुचानी है।
3. हमारा केवल लक्ष्य अपराधियों को दण्डित करना तथा दल खालसा को सुदृढ करने के लिए यथाशक्ति उपाय है। 14 मई को दल खालसे ने सरहिन्द नगर पर आक्रमण कर दिया। उन्होंने सूबे वजीद खान का शव साथ में लिया और उस का प्रदर्शन करने लगे। इस बीच बजीद खान का बेटा समुंद खान सपरिवार बहुत सा धन लेकर दिल्ली भाग गया। उसे देखते हुए नगर के कई अमीरों ने ऐसा ही किया क्योकि उन्हें ज्ञात था कि शत्रु सेना के साथ अब मुकाबला हो नहीं सकता। अत: भागने में ही भलाई है। जन साधारण भी जानते थे कि दल खालसा अब अवश्य ही सरहिन्द पर कब्जा करेगा।

उस समय फिर रक्तपात होना ही है अत: कुछ दिन के लिए नगर छोड़ जाने में ही भलाई है। इस प्रकार दल खालसे के सरहिन्द पहुंचने से पहले ही नगर में भागम भाग हो रही थी। दल खालसा को सरहिन्द में प्रवेश करने में एक छोटी सी झड़प करनी पड़ी। बस फिर आगे का मैदान साफ था। सिंघों ने वजीद खान का शव सरहिन्द के किले के बाहर एक वृक्ष पर उल्टा लटका दिया, उसमें बदबू पड़ चुकी थी। अत: शव को पक्षी नौचने लगे। किले में बची-खुची सेना आकी होकर बैठी थी।

स्वाभाविक था वे करते भी क्या? उनके पास कोई चारा नही था। दल खालसा ने हथियाई हुई तोपों से किले पर गोले दागे, घण्टे भर के प्रयत्न से किले में प्रवेश का मार्ग बनाने में सफल हो गये। फिर हुई हाथों-हाथ शाही सैनिकों से लड़ाई। बंदा सिंह ने कह दिया "अड़े सो झड़े, शरण पड़े सो तरे" के महा वाक्य अनुसार दल खालसा को कार्य करना चाहिए। इस प्रकार बहुत से मुग़ल सिपाही मारे गये। जिन्होनें हथियार फैंक कर दल खालसा से पराजय स्वीकार कर ली; उनको युद्ध बन्दी बना लिया गया।

दल खालसा के सेना नायक बंदा सिंह ने विजय की घोषणा की और अपराधियों का चयन करने को कहा। जिससे उन्हें उचित दण्ड़ दिया जा सके परन्तु कुछ सिंघो का मत था कि यह नगर गुरू शापित है अत: इसे हमें नष्ट करना है। किन्तु बंदा सिंह इस बात पर सहमत नहीं हुआ। उनका कहना था कि इस प्रकार निर्दोश लोग भी बिना कारण बहुत दुख झेलेगें जो कि खालसा दल अथवा गुरू मर्यादा के विरूद्ध है। बंदा सिंह की बात में दम था अत: सिंह दुविधा में पड़ गये। वे सरहिन्द को नष्ट करना चाहते थे। इस पर बंदा सिंह ने तर्क रखा हमें अभी शासन व्यवस्था के लिए कोई उचित स्थान चाहिए। इस बात को सुनकर कुछ सिंह आकी हो गये। उन का कहना था सरहिन्द को सुरक्षित रखना गुरू के शब्दों से मुंह मोड़ना है। इस पर बंदा सिंह से अपनी राजधानी मुखलिस गढ़ को बनाने की घोषणा की। सरहिन्द से मिले धन को तीन सौ बैल गाड़ियों में लाद कर वहां पहुंचाने का कार्य प्रारम्भ कर दिया गया। तद्पश्चात इस गढ़ी का नाम बदल कर लौहगढ़ कर दिया और इसका आगामी युद्धों को ध्यान में रखते हुए आधुनिकीकरण करने का कार्यक्रम बनाया।

मलेरकोटला पर आक्रमण

शत्रु पर विजय प्राप्ति की दृष्टि से खालसा दल के नायक बंदा सिंह बहादुर ने अगला कदम मलेरकोटला की ओर बढाया। यहां के नवाबों ने श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी पर शाही सेना की ओर से बढ़-चढ़ कर आक्रमण किये थे। भले ही गुरूदेव के सपुत्रों की हत्या करवाने में उन का कोई हाथ नहीं था। इस समय उस परिवार के सभी पुरूष सदस्य गुरूदेव के हाथों अथवा छप्पड़ चीरी के रणक्षेत्र मे मारे जा चुके थे। जब दल खालसा मलेरकोटला पहुंचा तो वहां की स्थानीय जनता रक्तपात होने के भय से कांप उठी, उन्होंने तुरन्त अपना एक प्रतिनिधि मण्डल बहुत बड़ी धन राशि नज़राने के रूप में देकर दल खालसा के नायक बंदा सिंह के पास भेजा। बंदा सिंह इस नगर को किसी प्रकार की क्षती पहुंचने के पक्ष में नहीं था क्योकि उसे ज्ञात हो गया था कि यहां के नवाब शेर मुहम्मद खान ने गुरूदेव के दोनों छोटे सुकुमारों की हत्या का विरोध किया था। साहबजादों के प्रति दिखाई सहानुभूति के कारण किसी प्रकार के प्रतिशोध का प्रश्न ही नहीं उठता था। अत: वह प्रतिनिधि मण्डल से बहुत सद्भावना भरे वातावरण में मिले और नज़ारने स्वीकार कर लिए, इस प्रतिनिधि मण्डल में एक स्थानीय साहुकार किशन दास ने बंदा सिंह को पहचान लिया। लगभग दस वर्ष पूर्व एक बैरागी साधु के रूप में अपने गुरू रामदास के साथ माधो दास के नाम से उनके यहां जो व्यक्ति ठहरा था, वह यही बंदा सिंह बहादुर है। इस रहस्य के प्रकट होते ही भय-प्रसन्नता में प्रवृत हो गया और सभी आपस में घुल मिल गये। तभी बंदा सिंह जी ने स्थानीय प्रतिनिधि मण्डल को वचन दिया यदि यहां के शासक हमारी अधीनता स्वीकार कर लें तो यहां किसी का बाल भी बांका नहीं होने दिया जायेगा। तभी उन को बताया गया कि दल खालसा के आने की सूचना पाते ही वहां का फौजदार भाग गया है।